# पुनरुत्थान की सामर्थ ( 25:13-27 )

मैंने बहुत से कैथेड्रल देखे हैं, जिनमें मुझे सबसे आकर्षक लंदन का वैस्टमिंस्टर ऐबे ही लगा। मुझे यह आश्चर्यजनक इसलिए नहीं लगा कि यहां पर राज्याभिषेक होता था, बल्कि इसलिए कि यहां राजाओं, राजनीतिक नेताओं, सैनिक अधिकारियों और प्रसिद्ध कलाकारों को दफ़नाया गया है। उन लोगों ने जीवन में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में ख्याति पाई थी, परन्तु इन कब्रों में एक बात सामान्य थी कि हर प्रसिद्ध नाम के साथ लिखा हुआ था ''यहां ... की देह पड़ी है।'' वाल्टर बी. नाइट ने यह अवलोकन किया:

> यीशु की कब्र में कितनी अलग बात थी। उसके बाहर यह नहीं लिखा [था] कि ''यहां यीशु की देह पड़ी है,'' बल्कि स्वर्गदूत द्वारा कहा गया स्मृति लेख था: ''वह यहां नहीं है, क्योंकि वह जी उठा है।'' सांसारिक महानता आमतौर पर कब्र पर जाकर समाप्त हो जाती है। यीशु की सामर्थ का महानतम प्रदर्शन कब्र पर आरम्भ हुआ जहां उसने मृत्यु पर विजय पाई।[1]

यीशु का पुनरुत्थान पौलुस के प्रचार का मुख्य बिन्दु था। अथेने में, ''वह यीशु का, और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था'' (17:18घ)। रोम में उसने लोगों को बताया कि ''मसीह वह है जो मर गया बरन मुर्दों में से जी भी उठा'' (रोमियों 8:34ख)। उसने कुरिन्थुस के मसीहियों के नाम पत्र में लिखा: ''यदि मसीह नहीं जी उठा, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो'' (1 कुरिन्थियों 15:17)।

फिर तो, अध्याय 23 से 26 तक पौलुस के ''प्रत्युत्तरों'' में पुनरुत्थान के मुख्य बिन्दु को पाकर हमें आश्चर्य नहीं होता। चारों ''मुकदमों'' में[2] उसने पुनरुत्थान पर ज़ोर दिया: पहले ''मुकदमे'' में, पौलुस ने महासभा के सामने पुकारा, ''हे भाइयो, ... मरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकदमा हो रहा है'' (23:6घ)! दूसरे मुकदमे में, पौलुस ने फेलिक्स को बताया, ''यह मैं तेरे साम्हने मान लेता हूं, कि ... मैं अपने बापदादों के परमेश्वर की सेवा करता हूं: ... और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा'' (24:14, 15)। तीसरे मुकदमे में,

यीशु के पुनरुत्थान की पौलुस की प्रस्तुति इतनी ज़ोरदार थी कि फेस्तुस को इसकी समझ तो नहीं आई, परन्तु उसके मन में अमिट छवि बन गई (25:19)। अगले पाठ में, हम चौथे ''मुकदमे'' का अध्ययन करेंगे, जब पौलुस ने राजा अग्रिप्पा और अन्य विशिष्ट अतिथियों से कहा, ''जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?'' (26:8; 26:22, 23 भी देखिए)।

अध्याय 23 से 26 में से पुनरुत्थान को निकाल लें तो वहां एक रोमी नागरिक से दुर्व्यवहार की कहानी ही मिलेगी। पुनरुत्थान के शामिल होने से, हमें पौलुस के जीवन में इसके सामर्थ की जोरदार गवाही मिलती है। ''[इन अध्यायों को] एक करने वाला विषय पुनरुत्थान और विजयी प्रभु में विश्वास है जो हमें जीवन के सबसे दुखदायी दबावों में मज़बूत तथा दिलेर बना सकता है।''[3]

अध्याय 21 से लेकर, पौलुस को अपने जीवन के सबसे कठिन मुकदमों का सामना करना पड़ा। इस पाठ में, हम देखना चाहते हैं कि जी उठे प्रभु में विश्वास ने पौलुस को कैसे इन मुकदमों में मजबूत किया और कैसे इस प्रकार का विश्वास हमें विजय दिलाने में सहायक हो सकता है। हमारे पाठ की पृष्ठभूमि वही घटनाएं होंगी जिनके कारण पौलुस अपना प्रत्युत्तर देने के लिए अग्रिप्पा के सामने गया।

## उलझन में पड़ा प्रशासक (25:13-23)

पौलुस द्वारा कैसर की दुहाई देने पर, फेस्तुस ने उसे रोम भेजने के लिए प्रबन्ध होने तक बन्दी बनाकर रखा। इन प्रबन्धों में समय लग गया होगा क्योंकि उन्हें रोम जाने के लिए एक जहाज़ और सुरक्षा के लिए एक सरकारी रक्षक दल चाहिए था (27:1)। अच्छी तरह काम करने के बहाने, आमतौर पर अधिकारी एक बार में कई-कई कैदियों को ले जाने के लिए प्रतीक्षा करते थे (27:1)। परन्तु, फेस्तुस के लिए तैयारी का सबसे कठिन भाग सम्राट को देने के लिए रिपोर्ट लिखना था।

### शाही अतिथि (आयतें 13, 14)

जब प्रबन्ध किए जा रहे थे, तो फेस्तुस के पास दो आदमी राजमहल से आए: ''अग्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की'' (आयत 13)।

राजा अग्रिप्पा[4] उस हेरोदेस[5] का पुत्र था जिसने याकूब को मरवाया था और पतरस की हत्या करने के लिए उस पर मुकदमा चलाया था (12:1-4)। बिरनीके उसकी बहन थी। अध्याय 24 में हम द्रुसिल्ला नामक उसकी एक दूसरी बहन से मिले थे, जिसकी शादी राज्यपाल फेलिक्स से हुई थी (आयत 24)। हमारी इस कहानी के समय अग्रिप्पा की आयु लगभग बत्तीस वर्ष थी जबकि बिरनीके उससे एक साल छोटी थी।

अग्रिप्पा के नाम के साथ ''राजा'' शब्द लगने के कारण, लग सकता है कि वह फेस्तुस से बड़ा अधिकारी था, परन्तु सत्य इसके बिल्कुल विपरीत था। अग्रिप्पा को यह नाम अपने प्रसिद्ध पिता से विरासत में मिला था, परन्तु उसे उसका राज्य विरासत में नहीं

मिला था। वह यहूदिया के उत्तर-पश्चिम इलाके में एक छोटे से क्षेत्र पर राज करता था।[6] उसे उच्च अधिकार प्राप्त रोमी अधिकारी से अच्छे सम्बन्धों का लाभ मिल गया था। इसलिए, जब फेस्तुस ने अपना प्रशासन आरम्भ किया तो अग्रिप्पा और बिरनीके उससे ''भेंट'' करने (RSV में ''स्वागत करने''; 25:13) और उसकी नियुक्ति के लिए उसे बधाई देने आए थे।

अग्रिप्पा और बिरनीके के लिए, कैसरिया में जाना घर आने के समान था। इस नगर को उनके परदादा हेरोदेस महान ने बनवाया था। नगर की संगमरमर की विशाल इमारतें, संगमरमर की भव्य पटरियां और मूर्तियां और हर जगह भव्य भवन हेरोदेस के शौक के गवाह थे।[7] उनके पिता के शासन में कैसरिया भी राजधानी नगर था, उसका शासन भी हेरोदेस महान जैसा ही था, शायद उससे भी बढ़कर।[8] अन्त में किले में पहुंचने पर कड़वी-मीठी यादें अवश्य ही अग्रिप्पा और बिरनीके के हृदय में उमड़ आई होंगी। उनका बचपन इसी किले में बीता था। पन्द्रह वर्ष पहले यहीं पर उनके पिता की दर्दनाक मृत्यु हुई थी[9] (12:20-23)।

यदि किसी ने उन्हें बताया हो कि उनका आना यीशु की एक भविष्यवाणी का पूरा होना था तो वे चौंक गए होंगे:

> परन्तु लोगों से सावधान रहो। क्योंकि वे तुम्हें महासभाओं में सौपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। तुम मेरे लिए हाकिमों *और राजाओं* के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिए पहुंचाए जाओगे (मत्ती 10:17, 18)।

पौलुस पहले दो राज्यपालों (फेलिक्स और फेस्तुस) के सामने बोल चुका था; अब परमेश्वर एक राजा के सामने उसके बोलने के लिए मंच तैयार कर रहा था।

निश्चय ही फेस्तुस ने अग्रिप्पा और बिरनीके के पारिवारिक नाम[10] और यहूदिया के धार्मिक जीवन में राजा की भूमिका के कारण उनका स्वागत किया।[11] दिन बीतने पर जब राज्यपाल को अग्रिप्पा का पता चला तो उसने निर्णय लिया कि उस जवान राजा का आना उसके लिए लाभदायक हो सकता है। क्या पता कि अग्रिप्पा उसे महल के तालाबन्द कमरे में पड़े तम्बू बनाने वाले उस छोटे से यहूदी के जटिल मामले की गहराई को समझा सके। द्रुसिल्ला की तरह (24:24), अग्रिप्पा भी मरियम्ने नामक एक यहूदी राजकुमारी की संतान था,[12] और उसे यहूदी समझा जाता था। वह यहूदी मामलों में रोम का स्थानीय विशेषज्ञ था (देखिए 26:3, 27)। इस प्रकार, अग्रिप्पा और बिरनीके के ''... बहुत दिन वहां रहने के बाद फेस्तुस ने पौलुस की कथा राजा को बताई'' (25:14क)।[13]

### एक रोमी दृष्टिकोण ( आयतें 14-21 )

फेस्तुस के वृत्तांत से हम इस मुकदमे को रोमी दृष्टिकोण से, विशेषकर एक रोमी व्यक्ति के दृष्टिकोण से देख सकते हैं जिसे यहूदी मत और मसीहियत के बारे में जानकारी

नहीं थी। उसकी बातें इसका अध्ययन हैं कि कैसे किसी वक्ता को ऊंचा करने के लिए तथ्यों को तोड़ा मरोड़ा जा सकता है।[14]

> एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स बन्धुआ[15] छोड़ गया है। जब मैं यरूशलेम में था, तो महायाजक और यहूदियों के पुरनियों ने उस की नालिश की; और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी जाए परन्तु मैंने उन को उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिए सौंप दें, जब तक मुद्दाअलैह को अपने मुद्दइयों के आमने-सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले।[16] सो जब वे यहां इकट्ठे हुए, तो मैंने कुछ देर न की,[17] परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी। जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था।[18] परन्तु अपने[19] मत[20] के, और यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उस को जीवित बताता था, विवाद करते थे (आयतें 14ख-19)।

फेस्तुस की अज्ञानता पर अग्रिप्पा जरूर मुस्कराया होगा। परन्तु उलझन में पड़े हुए भी, फेस्तुस ने दो तथ्यों का पता लगा लिया था: पहला, यह कि मुद्दा धार्मिक था, राजनीतिक नहीं। जैसे गल्लियो ने यहूदियों को बताया था कि ये ''वाद-विवाद शब्दों, और नामों, और तुम्हारे यहां की व्यवस्था के विषय में ...'' (18:15क) हैं।[21] फेस्तुस ने झट से ''एक धर्म दूसरे धर्म की तरह ही अच्छा है'' के नारे को (इस विशेष टिप्पणी के साथ) मान लिया होगा कि ''... और उनमें से कोई भी किसी काम का नहीं।'' कार्यालय के बहुत से अन्य लोगों की तरह, राज्यपाल भी धार्मिक मामलों से अनभिज्ञ था और उसने ऐसा ही बने रहने का निश्चय किया हुआ था।

परन्तु, फेस्तुस यह भी समझ गया था कि झगड़ा इस बात पर था कि यीशु नाम का कोई आदमी जीवित है भी या नहीं। असहमति की आरम्भिक बात पर फेस्तुस के मूल्यांकन से, मैं प्रभावित भी होता हूं और दुखी भी। मैं प्रभावित इसलिए हूं कि राज्यपाल इस प्रश्न के महत्व को कि ''क्या यीशु जीवित है या मृत?'' कितनी चतुराई से समझ गया था। कई लोग जो मसीही होने का दावा करते हैं, यहां तक कि कई प्रचारक भी विचार नहीं करते कि मुख्य मुद्दा तो पुनरुत्थान का ही है।[22]

साथ ही, मैं फेस्तुस द्वारा लापरवाही (लगभग छिछोरेपन) से इस विषय अर्थात ''यीशु नाम किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उसको जीवित बताता था, विवाद'' को टाल देने पर दुखी होता हूं।[23] राज्यपाल ने पुनरुत्थान का महत्व एक केंचुए के मन में किसी हीरे या एक सूअर के मन में सितारों की तरह दिखाया। फेस्तुस के जिज्ञासु मन और खुला हृदय न रखने के कारण कितनी हानि उठाई!

आइए आगे सुनें कि उसने ''पौलुस की कथा राजा को [कैसे] बताई'': ''और मैं उलझन में था, कि इन बातों का पता कैसे लगाऊं? इसलिए मैंने उससे पूछा, क्या तू यरूशलेम जाएगा, कि वहां इन बातों का फैसला हो?'' (25:20)। (फेस्तुस ने जानबूझकर

यह उल्लेख नहीं किया कि उसका यह सुझाव यहूदियों को खुश करने के लिए था [आयत 9]।) ''परन्तु जब पौलुस ने दुहाई दी, कि मेरे मुकदमे का फैसला महाराजाधिराज के यहां हो;[24] तो मैंने आज्ञा दी, कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूं, उस की रखवाली की जाए'' (आयत 21)।

साधारण तौर पर फेस्तुस की मनोस्थिति के वर्णन के लिए ''व्यर्थ'' शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है (देखिए आयतें 26, 27)। उसे आशा थी कि जवान राजा से उसे सही जानकारी मिल जाएगी।

**एक आश्चर्यजनक बिनती ( आयतें 22, 25-27 )**

पौलुस के उल्लेख से अग्रिप्पा की दिलचस्पी बढ़ गई होगी। यीशु के अनुयायियों को फेस्तुस तो नहीं जानता था, पर अग्रिप्पा उन्हें अच्छी तरह जानता था। हेरोदेसों का क्रूर इतिहास मसीहियत के फैलने के आशीषित इतिहास से मजबूत रस्सी की तरह बटा हुआ था।[25] फलस्तीन में रहते हुए, अग्रिप्पा ने इस ''स्वधर्मत्यागी यहूदी'' और मसीहियत के प्रसिद्ध वकील के बारे में सुना होगा (देखिए 26:26)। पौलुस को सुनने के लिए राजा कभी आराधनालय में नहीं गया होगा, परन्तु यहां उसके लिए अपने कानों से सुनने का अवसर था, ऐसा अवसर जिसका वह विरोध नहीं कर पाया। ''तब अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूं'' (25:22क)। पौलुस को सुनने की अग्रिप्पा की इच्छा के बहुत से कारण होंगे, जैसे-जिज्ञासा, सरकारी दौरे से नीरसता के लिए कुछ आराम परन्तु हो सकता है कि उसके मन के छोटे से किसी कोने में यीशु के बारे में जानने की इच्छा ने जगह भी बनाई हो।

फेस्तुस ने अग्रिप्पा की बिनती प्रसन्नता से स्वीकार कर ली। इस बिनती को स्वीकार करके वह अपने एजेंडे की कई बातों को पूरा कर सकता था, जैसे (1) अपने अतिथियों का सम्मान। (2) उनके लिए एक और दिन का मनोरंजन उपलब्ध कराना (हर रोज़ कुछ नया लाना कठिन था)। (3) अपना बचाव (यदि रोम के साथ उसकी कोई गड़बड़ होती, तो उसके पास बड़े प्रसिद्ध गवाह होने थे जो गवाही दे सकते थे कि पौलुस के मामले में न्याय देने के लिए उससे जो बन सका, उसने किया)।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि राज्यपाल को उम्मीद थी कि रोम में भेजने के लिए आधिकारिक रिपोर्ट लिखने में इससे कुछ सहायता मिलेगी।[26] साफ़ बात तो यह है, कि फेस्तुस को समझ नहीं आ रहा था कि क्या लिखा जाए। बाद में उसने अग्रिप्पा और अपने अन्य अतिथियों के सामने माना:

> जब कि [पौलुस ने] आप ही महाराजाधिराज की दुहाई दी, तो मैंने उसे भेजने का उपाय निकाला। परन्तु मैंने उसके विषय में कोई ठीक बात नहीं पाई कि अपने स्वामी के पास लिखूं, इसलिए मैं उसे तुम्हारे साम्हने और विशेष करके हे

> महाराजा अग्रिप्पा तेरे साम्हने लाया हूं, कि जांचने के बाद मुझे कुछ लिखने को मिले। क्योंकि बन्धुए को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए, उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है (25:25ख, 27)।

ऐसा नहीं कि फेस्तुस के पास लिखने के लिए कुछ नहीं था, परन्तु मुश्किल यह थी कि उसके पास लिखने को जो कुछ भी था उसका रोम में कुछ महत्व नहीं था। उसके पास आरोप तो थे, परन्तु प्रमाण कोई नहीं था। इन आरोपों में सम्राट ने दिलचस्पी नहीं लेनी थी। इसलिए उसने जल्दी से अग्रिप्पा को आश्वस्त किया: ''तू कल सुन लेना'' (आयत 22ख)।

**एक राजकीय सभा ( आयत 23 )**

आयत 23 कहती है,

> ... दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से[27] आकर पलटन के सरदारों और नगर के बड़े लोगों के साथ दरबार में पहुंचे, तो फेस्तुस ने आज्ञा दी, कि वे पौलुस को ले आएं।[28]

इस दृश्य को अपने मन में उतारकर देखें: दरबार सम्भवत: हेरोदेस महान द्वारा श्रोताओं के लिए बनाया गया यह भव्य हॉल था। ''बड़े-बड़े चित्र पर नक्काशी की हुई दीवारों से लगते खम्भों के साथ, दीवारों की भी रौनक बढ़ाते थे।''[29] झण्डों तथा बैनरों से यह कमरा बड़ी अच्छी तरह सजाया गया था।[30] दीवार के आसपास ''समारोहों के लिए तैनात होने वाले लम्बे-लम्बे रोमी सैनिकों की पैदल टुकड़ी थी।''[31]

तुरही वादकों ने धुन बजानी शुरू की और दरबार में शानदार परेड होने लगी। सर्वप्रथम क्षेत्र के सबसे प्रख्यात लोग अर्थात प्रभावशाली अधिकारी और व्यापारिक नेता पांच शक्तिशाली रोमी सेनापतियों के साथ आए।[32] तुरहियों के दोगुने शोर के बाद, फेस्तुस अपने यशस्वी अतिथियों को बिठाने के लिए आगे बढ़ा। अग्रिप्पा और बिरनीके के वस्त्र राजाओं वाले थे:[33] बैंजनी पोशाक पहने और उनके सिरों पर सोने की मालाएं थीं। बिरनीके की सुन्दरता में उसके बालों और कलाई पर मोतियों की चमक ने चार चांद लगा दिए थे। फेस्तुस भी कम नहीं था, उसने राज्यपाल वाली लाल रंग की पोशाक पहनी हुई थी, जो विशेष अवसरों पर ही पहनी जाती थी। यह चमक-दमक, सौन्दर्य और सांसारिक प्रताप का एक शानदार प्रदर्शन था।[34]

फेस्तुस की आज्ञा मिलने पर, ''पौलुस को'' सभा में पेश कर दिया गया। यह विषमता अवश्य ही चौंकाने वाली होगी। यह प्रेरित जिसके हाथों में बन्धी हथकड़ियों के कारण हिलने से टन-टन की आवाज़ें आती थीं और पोशाक जंग से भूरी पड़ चुकी थी, उस प्रभावशाली सभा के सामने खड़ा था (26:29)। उसकी हालत बहुत ही दयनीय थी अर्थात

उसके शरीर पर सूखे हुए घाव थे, उसका शरीर दशकों के बांधे जाने और मार खाने से झुक गया था। भाव यह कि, जब तक कोई उसकी आंखों में न झांके, उसे उस पर तरस ही आता होगा, क्योंकि उसकी आंखों में भीतरी ज्वाला थी।

आप इस प्रेरित के लिए दुखी न हों। उस सम्माननीय सभा में प्रभावी वही था, सभा के लोग नहीं। उनका नहीं, बल्कि उसी का नाम सब के होंठों पर था। उस अवसर के खास व्यक्ति (VIP)[35] वे नहीं, बल्कि वह ही था। किसी ने कहा है, ''क्या वे यह जानकर हैरान नहीं होंगे कि उनके बारे में सुनने का हमारे पास एकमात्र कारण यही है, कि उस दिन, उनके जीवन पौलुस नाम के एक कैदी से जुड़ गए थे?''

धनी और प्रसिद्ध लोगों की जीवनशैली से ईर्ष्या न करें (देखिए मरकुस 10:42-44.) बाहरी ठाठ-बाठ थोड़ी देर के हैं; ''शरीर की अभिलाषा, आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड ... मिटते जाते हैं।'' इसके विपरीत, ''जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा'' (1 यूहन्ना 2:16, 17)।

इब्रानियों की पुस्तक में लिखी बात की तरह, पौलुस ''बेधड़क होकर [कह सकता था] कि प्रभु मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है'' (इब्रानियों 13:6)। पौलुस में इतना आत्मविश्वास कहां से आया? दमिश्क के मार्ग में प्रभु से उसकी मुलाकात जो हो चुकी थी; प्रभु ने उसे विशेष आज्ञा दी हुई थी; उसने अपना जीवन प्रभु को सौंप दिया था। इसीलिए वह निर्भीक होकर कुछ भी सहकर किसी का भी सामना कर सकता था।

अगले पाठ में, हम श्रोताओं के हाल के नाटकीय दृश्य की ओर लौटेंगे। उससे पहले हम, पौलुस के जीवन में पुनरुत्थान की सामर्थ पर ज़ोर देना चाहते हैं।

## आत्मविश्वासपूर्ण प्रेरित

आइए इसी पर पुनर्विचार के साथ आरम्भ करते हैं कि हमारी कहानी के समय पौलुस को क्या-क्या सहना पड़ा। उसके मुकदमों को सात शीर्षकों में संक्षिप्त किया जा सकता है:[36] (1) *वह कारावास जिसके वह योग्य न था।* पौलुस को छोड़ दिया जाना चाहिए था, परन्तु वह कैद में ही रहा। (2) *विलम्ब जिसका कोई कारण नहीं बताया गया।* लिखा है, ''परन्तु ... दो वर्ष बीत गए।'' 24:27 के वे शब्द पढ़ने के लिए केवल एक या दो सैकण्ड लगते हैं, परन्तु पौलुस ने इन्हें चौबीस महीनों तक भोगा। यीशु ने पौलुस से यह तो प्रतिज्ञा की थी कि वह रोम में जाएगा (23:11), परन्तु उसने दो वर्ष के विलम्ब का उल्लेख नहीं किया था। (3) *कठोर आघात।* दो वर्षों तक प्रतीक्षा करने के बाद यहूदियों की घृणा कम नहीं हुई थी। वे पौलुस की हत्या की इच्छा करते रहे। (4) *झूठे आरोप।* पौलुस के विरुद्ध लगाए गए आरोप या तो काल्पनिक थे या झूठे। (5) *अनुचित शोषण।* फेलिक्स ने पहले पौलुस से घूस लेने की कोशिश की; फिर उसने यहूदियों को मनाने के लिए उसे इस्तेमाल करने की कोशिश की। फेस्तुस ने यहूदियों का सद्भाव पाने के लिए भी पौलुस का इस्तेमाल करने का प्रयत्न किया। (6) *अयोग्य न्यायकर्त्ता।* महासभा, फेलिक्स, फेस्तुस

और अग्रिप्पा से घृणित किसी और व्यक्ति या संस्था की कल्पना करना कठिन है; फिर भी उन्होंने उसका न्याय करने का साहस किया। (7) *एक अनिश्चित भविष्य।* पौलुस कभी-कभी हैरान होकर कहता होगा, ''कैसरिया से ही न निकला तो मैं रोम में प्रचार कैसे कर पाऊंगा?'' कैसर के सामने अपील करके भी, सम्राट के सामने अपने मुकदमे से कुछ प्राप्त होने के बारे में उसे पक्का पता नहीं था।

**उसका विश्वास**

इन सभी अनुचित मुकदमों में कौन सी बात थी जिसने पौलुस को स्थिर रखा? उसके विश्वास ने। विश्वास ही वह ''ढाल'' थी जिससे वह ''उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा'' पाया (इफिसियों 6:16)। उसका विश्वास अपने परमेश्वर में था। अन्त में अग्रिप्पा के सामने खड़े होकर उसने कहा था, ''सो परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूं'' (प्रेरितों 26:22क)। पौलुस ने लिखा, ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कोई नहीं हो सकता?''(रोमियों 8:31; NCV)। उसे यीशु के वायदे में विश्वास था कि वह एक दिन रोम में प्रचार करेगा (प्रेरितों 23:11)। परन्तु मैं सुझाव दूंगा, कि विशेष प्रकार से, *जी उठने* में उसके विश्वास ने उसे आगे बढ़ने का साहस दिया। हो सकता है कि उसे यह पता न चला हो कि उस पर वे कष्ट क्यों पड़े, परन्तु उसे यह समझ थी कि उसका उद्धारकर्त्ता जीवित है और सक्रिय है और सब सम्भाल सकता है! उसके साथ कुछ भी हो जाए, चाहे वह अन्त में कैसर के हाथों मर भी जाए, फिर भी सब कुछ ठीक होगा; पुनरुत्थान इस बात की गारन्टी था! जैसे उसने कुरिन्थियों के नाम पत्र लिखा,

> ... मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ (1 कुरिन्थियों 15:20)।
>
> ... परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है (1 कुरिन्थियों 15:57)।

**हमारा आत्मविश्वास**

पौलुस की विपत्तियों की सूची देखकर आप में से बहुत से लोग अपने आपको उसके साथ मिला पाए थे। उसकी तरह ही आप में से कई उन कारणों से कैद में हैं जिनमें उनकी कोई गलती नहीं थी। शायद आप अपंग होने या आगे बढ़ने की आशा न होने के कारण उसी कार्य से जुड़े हुए हैं।[37] कई तो उस अविलम्ब के कारण खीझ गए हैं जिसका कोई कारण नहीं। आप जीवन में किसी सकारात्मक विकास की प्रतीक्षा कर रहे हैं और ऐसा लगता है कि वह कभी नहीं आएगा। कई लोगों को तो कठोर आघात लगा है। एक विरोधी को मनाने के लिए आपने सब कुछ किया, परन्तु उसने दृढ़ निश्चय किया हुआ है कि वह सुलह नहीं करेगा। कई तो झूठे आरोपों का शिकार हुए हैं। अपने को बेदाग साबित करने के प्रयास करते-करते आप थक चुके हैं। किसी ने आपका शोषण किया है। आप जानते हैं कि दूसरों के हाथों में खेलने का क्या अर्थ है। आपको किसी मित्र, नियोक्ता या

जीवन साथी के द्वारा इस्तेमाल और अपमानित किया गया है। कइयों की तो ऐसे लोगों द्वारा आलोचना की जाती है जो स्वयं इसके योग्य नहीं हैं। शायद उन्हें इस बात की जलन होती है कि आपके पास इतना कुछ क्यों है। हम सभी को एक अनिश्चित भविष्य का सामना करना पड़ता है (याकूब 4:14क)।

पौलुस की तरह मुश्किलों का सामना करते हुए हम, कैसे आगे बढ़ सकते हैं? इसकी कुंजी विश्वास है। ''वह विजय जिससे संसार पर जय प्राप्त होती है हमारा विश्वास है'' (1 यूहन्ना 5:4ख)। इन शब्दों को किसी ऐसी जगह लिख लें जहां से आप इन्हें आसानी से कभी भी देख सकें। ''*किसी अनजान व्यक्ति का सामना हो जाए, तो उस पर भरोसा रखें जिसे आप जानते हैं।*''हो सकता है कि आपको यह पता न चले कि आपके आस-पास जीवन क्यों थम सा गया है, परन्तु आपको यह पता चल सकता है कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और वह आपकी सहायता करेगा और सब वस्तुएं मिलकर आपका भला ही करेंगी (1 यूहन्ना 4:10; इब्रानियों 13:6; रोमियों 8:28)। आप यह जान सकते हैं कि यीशु जीवित है और आपके जीवन में कार्य कर रहा है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद दो, जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिए नया जन्म दिया'' (1 पतरस 1:3)। आप निश्चिंत हो सकते हैं कि एक दिन वह आपको घर ले जाने के लिए फिर आएगा!

> देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूं: कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे। और यह क्षण भर में, पलक मारते ही पिछली तुरही फूंकते ही होगा: क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे, और हम बदल जाएंगे। क्योंकि अवश्य है, कि यह नाशवान देह अविनाश को पहिन ले, और यह मरनहार देह अमरता को पहिन ले। और जब यह नाशवान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है, पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया (1 कुरिन्थियों 15:51-54)।

अपने जीवन में सब कुछ गलत होने पर भी, पुनरुत्थान की निश्चितता से जुड़े रहिए!

## सारांश

क्या आप यीशु के पुनरुत्थान के बारे में फेस्तुस की तरह ही उलझन में हैं या पौलुस की तरह आश्वस्त? क्या आपके लिए पुनरुत्थान केवल ''यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उसको जीवित बताता था, [एक] विवाद'' है, या पुनरुत्थान एक जीवित सच्चाई है जिसने आपके जीवन को बदल डाला है? ''और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है; और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।... यदि मुर्दे जिलाए नहीं जाएंगे, तो आओ, खाएं-पीएं, क्योंकि कल तो मर ही जाएंगे'' (1 कुरिन्थियों 15:14, 32)। परन्तु, यदि मसीह जी उठा *है,* तो सब बातें इसके विपरीत हैं!

अगले पाठ में, हम पौलुस को दुनियावी श्रोताओं से यह पूछते हुए सुनेंगे, कि ''जब कि परमेश्वर मरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहां यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?'' यदि परमेश्वर संसार की रचना शून्य से कर सकता था, यदि परमेश्वर आदम में जीवन डाल सकता था, यदि वह पौलुस जैसे आदमी को बदल सकता था,[38] तो उसके लिए यीशु को मुर्दों में से जिलाना कौन सा बड़ा काम है!

''मसीह मुर्दों में से जी उठा *है,* और जो सो गए हैं, उनमें पहिला फल हुआ'' (1 कुरिन्थियों 15:20)। परमेश्वर करे कि यह सत्य आपके मन में समा जाए और आपका जीवन बदल जाए, जैसे इसने पौलुस के जीवन को बदलकर उसमें शक्ति भरी थी! अपना जीवन जी उठे प्रभु को सौंप दें,[39] और अच्छे व बुरे दिनों में उसके साथ चलें!

## प्रवचन नोट्स

इस पाठ में हमारे जीवनों में पुनरुत्थान की व्यावहारिक शक्ति पर ज़ोर दिया गया है, इसलिए मैं पुनरुत्थान के प्रमाणों या पुनरुत्थान से सम्बन्धित बाइबल की शिक्षा के अन्य पहलुओं पर समय नहीं गंवाता। आप पुनरुत्थान पर एक या दो अतिरिक्त पाठों का प्रचार करने की इच्छा रख सकते हैं। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अंग्रेज़ी) में ''ए सर्वे ऑफ द न्यू टैस्टामेन्ट'' (जुलाई 1993, पेज 16) में 1 कुरिन्थियों 15 की रूपरेखा दी गई है। द *प्रीचर'ज़ पीरियोडिकल* (अब *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* [अंग्रेज़ी]) के जनवरी 1983 के अंक और *ट्रुथ फॉर टुडे* के अप्रैल 1988 के अंक में पुनरुत्थान के प्रमाण देते दो प्रवचन दिए गए थे। पुनरुत्थान पर अन्य प्रवचन अंग्रेज़ी संस्करण के अगस्त 1983, नवम्बर 1985, जनवरी 1986 और दिसम्बर 1991 के अंक में मिल सकते हैं।

---

पाद टिप्पणियां

[1]वाल्टर बी. नाइट, *नाइट'स ट्रेयरी ऑफ इलस्ट्रेशन्ज़।* [2]मैं ''मुकदमों'' शब्द को उद्धहरण चिह्नों में रखता हूं क्योंकि सभा कक्षों में सही मुकदमा होने की बात सोचना कठिन लगेगा, और निश्चय ही अग्रिप्पा के सामने पौलुस का पक्ष वास्तव में कोई मुकदमा नहीं था। फिर भी, बहुत से विद्वान इन सबको ''मुकदमों'' का नाम देते हैं। इन सब में पौलुस को अपने जीवन के लिए नहीं, बल्कि अपने विश्वास के लिए मुकदमा लड़ना पड़ा था। [3]लॉयड जे. ओगिल्वी, *द कम्युनिकेटर'स कमैन्ट्री, vol 5, ऐक्ट्स।* [4]वह हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय था। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 180 पर चार्ट देखिए। उस भाग के पृष्ठ 45 पर संक्षेप में उसके बारे में बताया गया है। [5]यह हेरोदेस, हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम था। ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 42 से आरम्भ होने वाले पाठ में उस पर प्रवचन देखिए। [6]अग्रिप्पा के बारे में अधिक जानकारी के लिए और उसके शासन की सीमा के बारे में जानने के लिए, अगले पाठ के आरम्भ में देखिए। [7]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 156 पर देखिए। [8]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 45 पर देखिए। हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय ने नगर में आकर क्या सोचा होगा कि ''यह सब मेरा होना चाहिए''? [9]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' के पृष्ठ 203 पर इस पुस्तक का कालानुक्रम देखिए। [10]हेरोदेस के नाम में अभी भी वज़न था। अपने आपको ''हेरोदी'' कहलाने वाला एक धार्मिक/राजनीतिक दल देश में था (देखिए मरकुस 3:6; 12:13)।

[11]जैसे कि अगले पाठ में ध्यान दिलाया गया, अग्रिप्पा चाहे यहूदिया पर राज नहीं करता था, फिर भी रोम ने उसे यरूशलेम के मन्दिर का संरक्षक ठहराकर उसे महायाजक नियुक्त करने का अधिकार दिया हुआ था। अग्रिप्पा फेस्तुस की चुनौती को आसान या कठिन बना सकता था। [12]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' का पृष्ठ 43 देखिए। [13]संदेहवादी, एक बार फिर हैरान होते हैं कि राज्यपाल तथा राजा के बीच हुई बातचीत का ''लूका को कैसे पता चला।'' वे सुझाव देते हैं कि लूका ने फेस्तुस के शब्द ''स्वयं बना लिए।'' सम्भव है कि उनकी बातचीत करते समय वहां उपस्थित नौकर मसीहियत से सहानुभूति रखते हों (देखिए फिलिप्पियों 4:22)। सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि लूका को पवित्र आत्मा की प्रेरणा थी और राजाओं के शयन कक्षों में क्या होता है *परमेश्वर* उस सबको जानता है (2 राजा 6:12)। [14]इसकी तुलना यरूशलेम में हुई बातों के लुसियास के वर्णन से कीजिए (अगले पाठ में प्रेरितों 23:25-30 पर नोट्स देखिए)। [15]पौलुस के साथ कैसा भी व्यवहार किया गया हो, वह था तो एक *कैदी* ही। [16]अन्य शब्दों में, हर व्यक्ति को न्यायालय में उत्तर देने का अधिकार है। रोमी न्याय के प्रमुख सिद्धांतों में से यह एक था। कई बार, वे अपने आदर्शों से गिर गए ... परन्तु आज हम भी तो गिरते हैं। [17]फेस्तुस अपनी ईमानदारी की तुलना फेलिक्स की लापरवाही से कर रहा था। [18]फेस्तुस ने सम्भवत:, हत्या, बड़ी चोरी या किसी बड़े आरोप की अपेक्षा की थी। [19]फेस्तुस ने यहूदी पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति के लिए ''*उनके अपने* मत'' क्यों कहा? शायद वह राजा को यहूदी अगुओं का अन्याय करने वाले के रूप में नहीं देखना चाहता था। शायद उसके मुंह से निकल गया था। [20]हिन्दी के अनुवाद में ''मत'' शब्द 17:22 में अनुवादित शब्द ''मानने वाले'' का ही रूप है। शब्द का अक्षरश: अर्थ ''भूतों की उपासना'' है और KJV में इसका अनुवाद ''अन्धविश्वास'' हुआ है। ''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''एक प्रचारक जिसकी प्रशंसा किए बिना मैं नहीं रह सकता'' में प्रेरितों 17:22 पर नोट्स देखिए। फेस्तुस ने अपने यहूदी अतिथि का अपमान जानबूझ कर नहीं करना था इसलिए ''मत'' सम्भवत: बेहतर अनुवाद है। परन्तु, सम्भव है कि प्रेरितों 17 में पौलुस की तरह, उसके दिमाग में इसके दो अर्थ हों।

[21]रोमी नीति थी कि जब तक स्थानीय धार्मिक नियम या परम्पराएं रोमी कानून से उलझती नहीं तब तक वे उनमें हस्तक्षेप नहीं करते थे। [22]मैंने साम्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रचारकों को यह कहते सुना है, कि ''इस बात का कोई महत्व नहीं है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है या नहीं; महत्वपूर्ण बात यह है कि आरम्भिक मसीही *सोचते* थे कि वह जी उठा है।'' [23]एलबर्ट बार्नस, *ऐक्ट्स,* नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामेन्ट। [24]इन शब्दों से पता चलता है कि कैसर के सामने अपील करने का पौलुस का एक कारण फलस्तीन से जाने तक रोम द्वारा उसका बचाव करना था। पौलुस के दिमाग में यह था या नहीं, परन्तु कैसर के सामने पौलुस की अपील परमेश्वर के पूर्वप्रबन्ध का व्यावहारिक परिणाम थी। [25]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 44 तथा 45 देखिए। [26]रोम के कानून की पुस्तक के अनुसार, सर्वोच्च न्यायालय की हिरासत में भेजते समय कैदी के साथ एक लिखित रिपोर्ट भेजनी आवश्यक होती थी। [27]''धूमधाम'' का अनुवाद यूनानी शब्द *फैन्टेसिया* से किया गया है जिसका अर्थ है ''दिखाना या प्रदर्शन।'' यह शब्द, जिससे हमें अंग्रेज़ी के ''फैन्टेसी'' और ''फैन्टेस्टिक'' शब्द मिले हैं इनका इस्तेमाल भव्य प्रदर्शन को विस्तृत करने के लिए किया जाता था और कई अनुवादों में इस आयत में इसे ''भव्य प्रदर्शन'' के लिए इस्तेमाल किया गया है। [28]पूरी कहानी चश्मदीद गवाही की तरह लगती है। सम्भव है कि प्रसिद्ध डॉ. लूका को उस अवसर पर निमन्त्रण दिया गया था। [29]चार्लस आर. स्विनडॉल, *द स्ट्रैन्थ ऑफ़ ऐन इग्ज़ेक्टिंग पैशन।* [30]कई लोगों ने सुझाव दिया है कि महासभा वहां उपस्थित थी, परन्तु ऐसा लगता नहीं। वे कई दिन पहले घर चले गए होंगे (आयत 13 तथा 14 में समय के बीतने पर ध्यान दीजिए)। परन्तु, सम्भव है कि क्षेत्र के प्रभावशाली लोगों में से कुछ यहूदी वहां उपस्थित हैं। आखिर, कैसरिया फलस्तीन में ही तो था।

[31]विलियम बार्कले, *द ऐक्ट्स ऑफ़ द अपोस्टल्ज़,* द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ rev. ed. [32]जोसेफस ने कहा कि कैसरिया में पांच कमांडर लगाए गए थे। इन सभी अधिकारियों का एक हज़ार से ऊपर लोगों पर अधिकार था (प्रेरितों 21:31 पर नोट्स देखिए)। [33]उनके पिता ने राजाओं वाले वस्त्र पहने हुए थे (''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पृष्ठ 49 पर प्रेरितों 12:21 पर नोट्स देखिए)। [34]जी. कैम्पबेल मॉर्गन, *द ऐक्ट्स ऑफ़*

द *अपोस्टल्ज़* में इन शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। [35]ये अक्षर ''अति विशिष्ट व्यक्ति'' के लिए अंग्रेज़ी का संक्षिप्त रूप हैं। [36]ये सात प्वाइंट सदर्न हिल्ज़ चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, अबिलेन टैक्सास में 5 अप्रैल 1987 को दिए प्रवचन रिक ऐचले, ''रिज़ाइनिंग टू रिफाइनिंग'' से लिए गए हैं। [37]इस भाग में, मैंने कुछ सामान्य प्रासंगिकताएं देने का प्रयास किया है। इन मुकदमों को स्थानीय श्रोताओं की समस्याओं के साथ प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए। [38]यह प्रमाण कि यीशु सचमुच मुर्दों में से जी उठा, आवश्यकता के अनुसार जोड़ा जा सकता है। पौलुस के जीवन में आया नाटकीय परिवर्तन अपने आप में इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि यीशु सचमुच जीवित है। [39]प्रभु के निमन्त्रण का विस्तार करते हुए सुनने वालों की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिकता बनाई जानी चाहिए।